Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

स्वर्ण ऋण योजना के अंतर्गत भारतीय स्टेट बैंक की भूमिका

राधा पासी* डॉ.अशोक सोनी**

* शोधार्थी, गो.से.अर्थ वाणिज्य महाविद्यालय (स्वशासी), जबलपुर (म.प्र.) भारत
** मार्गदर्शक,विभागाधयक्ष (वाणिज्य) हवाबाग महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा वाले देश में स्वर्ण ऋण मार्किट सबसे अधिक चर्चा वाले विषयो में से एक बन गया है कई बैंक और एन.बी.एफ.सी.स्वर्ण ऋण प्रदान कर रही है वित्तीय संस्थानों की इस संदर्भ सूची में नाम सामने आये है। भारतीय स्टेट बैंक,यूनियन बैंक,एच.डी.एफ.सी.बैंक मुथूट फाइनेंस,मणप्पुरम फाइनेंस लिमिटेड आदि इन संस्थानों को इस बाजार की शीर्ष स्थिति तक पहुंचने के लिए एक दूसरे के बीच गाला काट प्रतियोगिता का सामना करना पड़ रहा है। संतुष्ट उधारकर्ता बैंक के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है लेकिन कुछ ऐसे भी उधारकर्ता होते है जो स्वर्ण ऋण संस्थानों की सुरक्षा प्रणाली से संतुष्ट नहीं होते है। इस अध्ययन का उद्देश्य है कि स्वर्ण ऋण से ग्राहकों को लाभ होता है कि नहीं तथा इसकी प्रक्रिया सरल है कि नहीं।

शोध अध्ययन – शोध अध्ययन के जरिये न केवल यह कोशिश की गई है कि बैंक में स्वर्ण ऋण का क्रियान्वयन किया जा रहा है कि नहीं बल्कि यह भी जानने की कोशिश की गई है कि सामाजिक परिवेश में व्यक्ति इसका लाभ उठा पा रहे है कि नही।

प्रस्तावना–राष्ट्रीयकरण से पूर्व देश की बैंकिंग व्यवस्था स्थान में इम्पीरियल बैंक का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था। यह एक व्यापारिक बैंक था परन्तु सन 1935 में रिजर्व बैंक की स्थापना से पूर्व यह केंद्रीय बैंक के रूप में भी कार्य किया करता था। यह सरकार का बैंकर हुआ करता था और सभी प्रकार के लेन–देनो का हिसाब रखा करता था। यह बैंको के बैंक के रूप में भी कार्य किया करता था उनसे निक्षेप स्वीकार करता है और मांग करने पर उन्हें ऋण भी दिया करता था। सन 1935 में रिजर्व बैंक की स्थापना के उपरान्त इम्पीरियल बैंक अपने केंद्रीय बैंकिंग कार्यो को त्याग दिया और एक पूर्ण व्यपारिक बैंक के रूप में ही कार्य करने लगा जिन पर रिजर्व बैंक की अपनी शाखाएँ नहीं थी वहाँ पर इम्पीरियल बैंक ही रिजर्व बैंक के एजेंट के रूप में कार्य करता रहा इस कार्य के लिए रिजर्व बैंक इम्पीरियल को निश्चित दर पर कमीशन दिया करता था उस समय यह सबसे शक्तिशाली व्यापारिक बैंक के रूप में जाना जाता था।

19वीं सदी के पहले दशक में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया की बाकी थी जब ये तीनो बैंक,बैंक ऑफ बंगाल,बैंक ऑफ बॉम्बे,बैंक ऑफ मद्रास का बैंक सभी तीन प्रेसिडेंसी बैंको को संयुक्त स्टॉक कम्पनियो के रूप मे शामिल किया गया था। ये रॉयल चार्टर के परिणाम थे इन तीनो बैंको को 1861 में पेपर मुद्रा अधिनियम के साथ कागजी मुद्रा जारी का विशेष अधिकार प्राप्त हुआ। जो उन्होंने रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया का गठन तक सही रखा प्रेसिडेंसी बैंक 27 जनवरी 1921 को एकजुट हो गए और पुनगर्ठित बैंकिंग इकाई में इसका नाम इम्पीरियल बैंक ऑफ इंडिया रखा भारतीय शाही बैंक में एक संयुक्त स्टॉक कम्पनी को जारी रखा। भारतीय स्टेट अधिनियम 1955 के प्रावधानों के मुताबिक भारतीय रिजर्व बैंक,जो भारत का केंद्रीय बैंक है जुलाई 1955 को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया बन गया।अपने स्थापना काल में बैंक के कुल 480 कार्यालय थे जिसमें शाखाएँ, उपशाखाएँ,तथा तीन स्थानीय मुख्यालय शामिल थे जो इम्पीरियल बैंको के मुख्यालयों को बनाया गया था।

परिभाषा

डॉ. एच.एल.हार्ट के अनुसार 'बैंकर वह व्यक्ति है जो अपने साधारण व्यवसाय के अंदर का द्रव्य जमा करता है,जिसे वह उन व्यक्तियों के चैको का भुगतान करके चुकाता है जिसे चैक के द्धारा मांग करने पर वापस किया जा सके।'

किनले के अनुसार 'बैंक एक ऐसी संस्था है जो उन व्यक्तियों को आवश्यकतानुसार सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कर्ज देती है जो अपने ऐसे रूपयो को जमा करते है जिनकी उन्हें तत्काल आवश्यकता नहीं है।'

भारतीय स्टेट बैंक का मुख्य ध्येय – भारतीय स्टेट बैंक का मुख्य ध्येय है कि विश्व स्तरीय मानदण्डों एवं महत्वपूर्ण अन्तराष्ट्रीय व्यवसाय के क्षेत्र में ग्राहकों,अंशधारियों और कर्मचारियों की संतुष्टि के साथ वित्तीय सेवाओं के विस्तारीकरण हेतु विकास बैंक के रूप में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करना द्य तथा ग्राहकों के लिए ऋणों की सेवा प्रदान करना है।

बैंकिंग उत्पाद – नवबंर 1999 में प्रारम्भ 'भारतीय स्टेट बैंक स्वर्ण जमा योजना' द्धारा बैंक ने इस वर्ष 6.08 टन सोना संग्रहीत किया,जो कुल बाजार अंश का 96%है राष्ट्रीय प्रतिभूति निक्षेपागार लि.(नेशनल सिक्योरिटीज डिपॉजिटरीज लिमिटेड)तथा केंद्रीय निक्षेपागार सेवाएं लि. (सेन्ट्रल डिपॉजिटरीज सर्विसेज लिमिटेड)नामक निक्षेपागारो में बैंक सह – प्रायोजक है इसकी निक्षेपागार सहभागी सेवाएं 'वी सेट' द्धारा सीधे राष्ट्रीय प्रतिभूति निक्षेपागार सेवाएं लि. से सीधो सम्बद्ध निक्षेपागार सहभागिता सेवाएं पुणे,गुवाहटी तथा कानपुर में शीघ्र शुरू की जाएगी। इस वर्ष बैंक ने व्यापार और सेवाक्षेत्र के लिए सामान्य प्रयोजन वाले लचीले सावधि ऋण निर्यातकों और लघु उद्योग क्षेत्र की आकस्मिक आवश्यकताए पूरी करने के लिए वैकल्पिक ऋण सेवा,केवल प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना के अंतर्गत कपडा क्षेत्र का वित्तीयन,स्वर्ण जमा पर रूपया ऋण योजना तथा कारपोरेट

ऋणियो के लिए स्थिर ब्याज सावधि ऋण योजनाएँ भी शुरू की है।

स्वर्ण ऋण – स्वर्ण को गिरवी रखकर बैंक से ऋण लेना स्वर्ण ऋण कहलाता है स्वर्ण ऋण आसानी से मिल जाता है। यह ऋण स्वर्ण को गिरवी रखकर ग्राहक को मुद्रा देती है अगर आपको पैसों को आवश्यकता है और आपके पास स्वर्ण है तो आप स्वर्ण ऋण ले सकते है। आजकल हर किसी न किसी को पैसों की सख्त आवश्यकता होती है पैसा होने पर प्रत्येक कार्य सरलतापूर्वक किये जा सकते है हर व्यक्ति के पास इतना पैसा नहीं होता है कि वो अपना घर गाड़ी खरीद सके। इसलिए हर कोई बैंक से ऋण लेता है और ऋण लेने के बाद वह उसे धीरे -धीरे चुकता है। आज कल अधिकतर लोग स्वर्ण पर ऋण लेते है क्योंकि यह सस्ता और आसानी से मिल जाता है क्योंकि इस ऋण को लेने के लिए कोई भी या किसी भी प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं होती है। इस ऋण को बेरोजगार व्यक्ति भी ले सकता है स्वर्ण ऋण के लिए दस्तावेज की भी जरूरत नहीं पड़ती है बस कुछ ही दस्तावेजो जैसे पहचान पत्र और घर का पता आदि की आवश्यकता पड़ती है यह ऋण व्यक्ति को कम ब्याज दर पर मिलता है। ऋण लेने वाला व्यक्ति पूरी अवधि के दौरान केवल ब्याज का भुगतान कर सकते है और अंत में ऋण लेने के लिए एक बार में पूरी राशि का भुगतान कर सकते है।

साहित्य की समीक्षा

डेवी एट (2010) बाजार सर्वेक्षण में स्वर्ण ऋण लेना एक सरल प्रक्रिया है इसमें इसमें उधारदाता ऋण लेने के लिए बैंक या वित्तपोषण एजेन्सी में अपने गहनों में रूप में घरेलू स्वर्ण को जमा कर 60%तक ऋण प्राप्त कर सकते है।

रोजिता(2010) स्वर्ण ऋण पर ध्यान केंद्रित किया है जिसमें वित्तीय सहायता का समर्थन किया उधारकर्ताओं कहा कि ऋण जरूरतों को पूरा करता है और सोने का एक आवश्यक निवेश बन जाता है, एक सांस्कृतिक, भावनात्मक और सुरक्षा परिपेक्ष्य से स्वर्ण सोने की जमा राशि के रूप में जाना जाता है। भारतीय बाजार में स्वर्ण ऋण की सुरक्षा में काफी बढ़ोतरी हुई है,जिसमे यह आकर्षक हो गया है।

ज्ञानेश (2012) लेखक ने उपभोक्ता धारणा और बढ़ते ऋण पर चर्चा की है,स्वर्ण ऋण के प्रति उपभोक्ताओं की धारणा काफी बदल गयी है कि संगठित स्वर्ण ऋण मार्किट में बदलतें समय के कारण उपभोक्ताओं की आवश्यकता बढ़ती जा रही हैं। इसलिए स्वर्ण ऋण में समय की अवधि के साथ-साथ काफी स्वर्ण ऋण की बढ़ती माँग में वृद्धि हुई हैं।

उद्देश्य:

1. भारतीय स्टेट बैंक में स्वर्ण ऋण की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
2. भारतीय स्टेट बैंक द्वारा स्वीकृत ऋण राशि का अध्ययन करना।
3. भारतीय स्टेट बैंक के स्वर्ण ऋण योजना से संबंधित सुझाव देना।

स्वर्ण ऋण की प्रक्रिया – बैंक द्वारा बेचे गए सोने के सिक्कों सहित स्वर्ण आभूषणों को गिरवी रखकर बैंक के विधमान ग्राहक रु.20 लाख तक का ऋण प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए कम से कम कागजी करवाई की आवश्यकता होती है और ब्याज की दर भी कम होती है।

प्रमुख प्रक्रिया – पात्रता-आभूषणों के वास्तविक स्वामि जो न्यूनतम 21 वर्ष आयु के हो एवं पर्याप्त आय के स्त्रोत हो ताकि ऋणी कम से कम ब्याज राशि जमा करने में सक्षम हो।

1. व्यवसाय- बैंक कर्मचारी पेंशनर सहित आय के स्थाई एवं अस्थाई स्त्रोत वाले व्यक्ति
2. ऋण राशि-न्यूनतम
3. ग्रामीण/अर्धाशहरी- 10000/-
4. शहरी /महानगर -20000/-
5. अधिकतम- 20लाख
6. मार्जिन-25%
7. अदायगी अवधि अधिकतम- 30 महीने
8. अदायगी ढंग -मूल राशि और ब्याज की अदायगी संवितरण के अगले माह से शुरू होगी।

प्रतिभूति:

1. स्वर्ण आभूषणों की प्रतिभूति

दस्तावेज़:

1. आवेदन पत्र
2. पहचान का प्रमाण पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड
3. निवास स्थान का प्रमाण बिजली बिल, फोन बिल , पासपोर्ट साइज़ फोटो।
4. डी.पी. नोट
5. स्वर्ण आभूषणों की सपुर्दगी पत्र के साथ
6. गवाह (अशिक्षित ऋणी की दशा में)
7. व्यवस्था पत्र

आभूषणों की वापसी – ऋणी से स्वर्ण ऋण लेजर पर पावती ले मेरे द्वारा गिरवी रखे सभी आभूषण पूर्ण और सही हालत में वापिस प्राप्त किये। मृतक के स्वर्ण ऋण खाते के गिरवी रखे आभूषण उसके वारिसों को समस्त ओपचारिकताऐ पूर्ण करने पर सौंपे।

भारतीय स्टेट बैंक की स्वर्ण ऋण की भूमिका – स्वर्ण ऋण के उपयोग करने के पश्चात जिले के आर्थिक विकास की गति में वृद्धि हुई है , भारतीय स्टेट बैंक स्वर्ण ऋण पर एक अच्छी भूमिका निर्वाह कर रहा है ।आर्थिक विकास हेतु प्रदत ऋणों के उपयोग पशचात राज्य एवं जिले के निवासियों के रहन सहन आर्थिक सामाजिक व शैक्षणिक स्थिति पे परिवर्तन आये हैं। शासन की विभिन्न योजनाओ के माधयम से अर्धसंरचनात्मक विकास एवं सामाजिक सुविधाओ का विस्तार हुआ हैं। बेरोजगार, शिक्षित बच्चों ,व्यक्तियों के व्यवसाय प्राम्भ करने का भी अवसर मिला हैं।

तालिका 1 (अगले पृष्ठ पर देखे)

स्वर्ण ऋण के फायदे:

1. व्यक्ति कम समय मे ऋण को पाने के लिए भारतीय स्टेट बैंक से स्वर्ण को गिरवी रखकर स्वर्ण ऋण का लाभ उठा सकता है।एक स्वर्ण ऋण आपात स्थिति के समय में तत्काल मदद देता है क्योंकि यह एक व्यक्ति को एक दिन के भीतर नगद प्राप्त करने में मदद करता है । ऋण का उपयोग किसी भी प्रकार के उद्देश्य को पूरा करनें के लिए किया जा सकता है।
2. शिक्षा के लिए स्वर्ण ऋण लिया जा सकता है।
3. कृषि के क्षेत्र में एवं आधुनिक तकनीक का प्रयोग करने एवं उसमे सुधार लाने के लिए भी ऋण लिया जा सकता हैं।
4. यात्रा पर जाते समय तत्काल निधि प्राप्त करना।
5. अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपनी संपत्ति को उपयोग करने की भावना देता हैं।
6. आकर्षक ब्याज दर
7. एक घण्टे के भीतर ऋण प्राप्त करना।

8. परेशानी से मुक्त आवेदन।
9. न्यूनतम दस्तावेज।
10. सोने के मूल्य के खिलाफ मानक ऋण राशि सुरक्षित भंडारण।

निष्कर्ष – भारतीय स्टेट बैंक की व्यक्तिगत स्वर्ण ऋण की प्रक्रिया सभी ऋणों की अपेक्षा में काफी सरल और परेशानी मुक्त होती हैं। इनमे ग्राहकों को अन्य ऋणों की अपेक्षा भटकना नही पड़ता हैं। स्वर्ण ऋण से ग्राहक संतुष्ट होता हैं,और तत्काल में ऋण पा कर अपनी उपयोगिता /आवश्यकता को पूर्ण कर सकता है,स्वर्ण ऋण की ब्याज दर में भी कमी होती हैं। जिससे ग्राहक इस ऋण को लेना पसंद करता हैं,और व्यक्ति के आभूषणों की सुरक्षा होती हैं।इससे व्यक्ति को किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. शर्मा हरिशचन्द्र,बैंकिंग विधि एवं व्यवहार,साहित्य भवन आगरा 1986
2. राजेश भारतीय स्टेट बैंक के वैयक्तिगत ऋणों का अध्ययन जबलपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में 2014
3. भारतीय स्टेट बैंक की वार्षिक रिपोर्ट 2000 –2001
4. दैनिक जागरण
5. www.sbi.co.in
6. www.jagran.com

तालिका 1

स्टेट बैंक स्वर्ण ऋण	स्वर्ण ऋण	लिक्विड स्वर्ण ऋण	बुलेट रिपेमेंट स्वर्ण ऋण
ऋण के प्रकार	अवधि	अधिविकर्ष	अवधि
वापसी भुगतान पद्धति	ऋण की राशि और ऋण लेने की तारीख से लेकर जब ऋण चुकाया जा रहा है उस महीने तक का ब्याज चुकाया जाता है।	मासिक तौर पर ब्याज का भुगतान किया जाता है	ऋण का समय खत्म होने तक भुगतान किया जाता है।
ऋण अवधि (महीने में)	36 माह	36 माह	12 माह
मार्जिन	25%	25%	35%

****